IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजनीतिक विचार एवं संस्थाएं (वाल्मीकी रामायण के संदर्भ में)

शोध छात्रा– अंकिता पाठक

शोध निदेशक– प्रोफेशर प्रताप विजय कुमार

(प्रचीन इतिहास एवं पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग)

हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय,खलीलाबाद, संत कबीर नगर

सम्बद्ध– सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर।

रामायण और महाभारत प्राचीन भारत के दो महाकाव्य हैं। इस महाकाव्यों में मानव जीवन के लिए जिन उदान्त सिद्धान्तों और दृष्टांतों को प्रस्तुत किया गया है उनके कारण ये भारतीय जीवन के प्रकाश स्तम्भ हो गये हैं। ऐतिहासिक ग्रन्थ होने के साथ–साथ ये भारत वर्ष के धार्मिक ग्रंथ भी हैं। महर्षि वाल्मीकी ने रामायण व व्यास मुनि ने महाभारत की रचना की। महर्षि वाल्मीकीकृत रामारयण प्राचीन भारत का धार्मिक ग्रंथ होने के साथ ही सामाजिक और राजनीतिक विचारों और आदर्शो का प्रमुख स्रोत है। श्रीभद् वाल्मीकि रामायण में रामकथा के माध्यम से देश की सामाजिक और राजनीतिक स्थित की जानकारी प्राप्त होती है। इसमें राजा दशरथ के पुत्र श्रीराम के जीवन और राक्षसों के राजा रावण के युद्ध और उनकी विजय का विस्तृत वर्णन करते हुए विभिन्न प्रकार के राजनीतिक सामाजिक धार्मिक नैतिक मूल्यों और आदर्शो की स्थापना की गयी है। रामायण में वर्णित महत्वपूर्ण राजनीतिक विचार निम्नलिखित हैं–

1. **राज्य सम्बन्धी विचार–** वाल्मीकि रामायण में राजा को ईश्वर का अंश कहा गया है। वाल्मीकि रामायण में राज्य और राजा एक दूसरे के पूरक माने गये। राज्य में राजा को केन्द्रीय स्थान दिया गया। उसके बिना राज्य का आस्तित्व नहीं था। राज्य को आवश्यक मानते हुए श्री वाल्मीकि ने अराजक राज्य का विस्तार ये वर्णन किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि समाज में शान्ति और सुव्यवस्था के लिए राजा का होना अति आवश्यक है। श्री वाल्मीकी ने उल्लेख किया है कि राजा दशरथ की मृत्यु के बाद सभी श्रेष्ठ ब्राह्मण, पुरोहित, वशिष्ठ जी और सभी मन्त्रियों ने एकत्र होकर मन्त्रणा की ओर कहा कि '' इक्ष्वाकुवंशी राजकुमारो में से किसी एक को आज ही यहॉ का राजा बनाया जाय क्योंकि राजा के बिना इस राज्य का नाश हो जायेगा।'' जहॉ भी राजा नही होता वहॉ के खेतों मे मुठ्ठी के मुट्ठी बीम नहीं बिखेरे जाते, राजा से रहित देश में पुत्र पिता के और स्त्री पति के वश में नही रहतीं। बिना राजा के राज्य में मनुष्य कोई पंचायत भवन नहीं बनवाते रमणीक उद्यान का निर्माण नहीं करवाते तथा हर्ष और उत्साह के साथ पुष्यगृह और धर्मशाला, मन्दिर आदि भी नहीं बनताते हैं।

उपरोक्त वर्णन के द्वारा वाल्मीकी ने प्रत्यक्ष रूप से राज्य की महत्ता को प्रदर्शित किया है। रामायण में वाल्मीकी ने विभिन्न प्रकार के राज्यों का वर्णन किया है। जिसमें कोशल नाम के जनपद का उल्लेख हैं। रामायण में यह उल्लेख है– ' कोशल नाम से प्रसिद्ध एक बहुत बडा जनपद है जो सरयूनदी के किनारे बसा हुआ है। वह प्रचुर धन–धान्य से सम्पन्न सुखी और समृद्ध शाली है।

रामायण में दुर्ग के महत्व को भी बार–बार स्पष्ट किया गया है । बालकाण्ड में अयोध्यापुरी का वर्णन करते हुए दुर्ग का उल्लेख किया है कि उसे नगरी में चारो ओर उद्यान और आम के बगीचे थे। लम्बाई और चौडाई की दृष्टि से वह पुरी बहुत विशाल थी तथा साखू के वन उसे चारों ओर से धरे हुए थे। उसके चारों ओर खाई खुदी गई थी जिसमें प्रवेश करना तथा लांघना अत्यन्त कठिन था। वह नगरी दूसरो के लिए सर्वथा दुर्गम और दुर्जय थी। घोडे हाथी, गाय, बैल, ऊॅट, गदहे है आदि उपयोगी पशुओं से वह पूरी भरी–पुरी थी।

2. **राजा के सम्बन्ध में विचारः–** राज्य मे ंराजा का महत्व सर्वोपरी है। श्रीमदृ वाल्मीकी रामायण के अनुसार राजा दशरथ की मृत्यु के बाद अयोध्या का राजसिंहासन राजविहीन हो जाता है, तो मन्त्रिगण गुरू वष्शिठ जी से कहते है कि इक्ष्वाकुवंशी राजकुमारों को अविा किसी दूसरे योग्य पुरूष को राजा के पद पर अभिषिक्त कीजिए। क्योकि राजा के अभाव में यह राज्य अरण्य जैसा हो रहा है।

इसी प्रकार एक स्थान पर वर्णन है कि वह बाली द्वारा राक्षस को मार कर वापस आने की अवधि में सुग्रीव को मन्त्रियों ने राजा के पद पर अभिषिक्त किया जिससे राजकार्यों का संचालन हो सके और सुग्रीव के न्यायापूर्वक राज्य का संचालन किया।

रामायण में राज्य की उत्पत्ति के विषय मे कुछ स्पष्ट नहीं किया गया है किन्तु राजा की दैवी या ईश्वर का अंश बताया गया है रामायण में अनके स्थानों पर कहा गया है कि श्रीराम ईश्वर के अवतार है। बालकाण्ड में कहा गया है कि कौशल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त सर्वलोकवन्दित जगदीश्वर श्रीराम को जन्म दिया। इसी तरह अयोध्याकाण्ड में कहा गया वे साक्षात् सनातन विष्णु थे और परम प्रचण्ड रावण के वध की अभिलाषा रखने वाले देवताओं की प्रार्थना पर मनुष्य लोक में अवतीर्ण हुए। अयोध्याकाण्ड में सुमित्रा ऐसा कहती है कि वे देवताओं के भी देवता तथा भूतों के भी उत्तम भूत है। सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी ने श्रीराम को देवताओं के समान माना है और उन्हें तीनों लोकों का नायक बताया है। भगवान श्रीराम श्रीविष्णु के तुल्य पराक्रमी हैं। देवता, असुर, मनुष्य, यक्ष, राक्षस सर्प विद्याधर, नाग,गन्धर्व, मृग सिंह किन्नर पक्षी और अन्य समस्त प्राणियों में कहीं किसी समय कोई भी ऐसा नही है जो श्रीरघुनाथ जी के साथ लोहा ले सकें।

3. **राजा की नियुक्ति :–** राजा की नियुक्ति के सम्बन्ध में महर्षि वाल्मीकी ने तीन सिद्धान्तों का उल्लेख किया है–

1. ज्येष्ठता का सिद्धान्त।
2. योग्यता का सिद्धान्त।
3. प्रजा या नागरिकों की सहमति।

वाल्मीकी कृत रामायण के अनुसार– :– श्री राम रजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र थे तथा सब प्रकार से सुयोग्य थे इसलिए राजा दशरथ उनको ही अयोध्या का राजा बनाना चाहते थे। इस प्रश्न पर विचार करने के लिए उन्होने सभा आमंत्रित की जिसमें मंत्री, श्रेष्ठ ब्राहम्ण, सामन्त, नरेश और प्रमुख व्यक्ति सम्मिलित थे, राजा दशरथ ने सभी से यह बात कही कि मेरे पुत्र श्रीराम मेरी अपेक्षा सभी गुणों में सर्वश्रेष्ठ हैं। शत्रुओं की नगरी पर विजय पाने वाले श्रीराम चन्द्र बल पराक्रम में देवराज इन्द्र के समान हैं। पुष्य नक्षत्र से युक्त चन्द्रमा की भांति समस्त कार्यो के साधन में कुशल तथा धर्मात्माओं में सर्वश्रेष्ठ उन शिरोमणि श्रीरामचन्द्र जी को मै प्रातः काल पुष्य नक्षत्र मे ंयुवराज के पद पर नियुक्त करूॅगा। पुनः उन सबकी सहमति जानने के लिए कहते है– यदि मेरा प्रस्ताव आप लोगों को अनुकूल जान पड़े और यदि मैंने अच्छी बात सोची हो तो आप लोग इसके लिए मुझे सहर्ष अनुमति दे अथवा यह बतायें कि मै किसी प्रकार से कार्य करूॅ।

वाल्मीकी ने श्रीराम के गुणों को बड़े विस्तार से वर्णित किया है कि राजा संसार में सत्यवादी, सत्यपरायण और सत्पुरूष हैं। साक्षात् श्रीराम ने ही धर्म के साथ अर्थ को भी प्रतिष्ठित किया है। श्रीराम धर्मज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, शीलवान अदोषदर्शी, शान्त, दीन–दुखियों को सांत्वना प्रदान करने वाले मृटुभाषी कृतज्ञ जितेन्द्रिय, कोमल स्वभाव वाले, स्थित बुद्धि

सदाकल्याणकारी, समस्त प्रणियों को प्रिय वचन बोलने वाले और सत्यवादी हैं। मन्थरा कहती है कि–राजा के सभी पुत्र राजसिंहासन पर नही बैठते है। यदि सबको बिठा दिया जाय जो भारी अनर्थ हो जाये। इसलिए राजा लोग राजकाज का भार ज्येष्ठ पुत्र पर ही रखते हैं यदि ज्येष्ठ पुत्र गुणवान न हो तो दूसरे गुणवान पुत्रों को भी राज सौंप देते हैं।

वाल्मीकी रामायण में वाल्मीकी ने राजा के राज्याभिषेक के सम्बन्ध में भी विचार प्रकट किये है। श्री वाल्मीकी के अनुसार श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास के बाद श्रीराम का राज्याभिषेक किया गया। श्रीराम के आयोध्या पहुॅचने के बाद राजा दशरथ में मंत्री, पुरोहित, वशिष्ठ जी के साथ रामचन्द्र जी के राज्याभिषेक के विषय में आवश्यक विचार करने लगे। तत्पश्चात् अशोक, विजय सिद्धार्थ जैसे मन्त्रियों के कहा कि विजय योग्य जो श्रीराम चन्द्र जी है उनके अभिषेक के लिए जो–जो आवश्यक कार्य करना है वह सब मंगल पूर्वक तुम लोग करों।

4. **राजा के गुणः–** वाल्मीकी रामायण मे राजा दशरथ और श्रीरामचन्द्र जी को आदर्श राजा बताया गया था और उनके गुण ही आदर्श राजा के गुण माने गये है। रामायण में आदर्श राजा की उपमा अग्नि, इन्द्र, सोम, यम व वरूण से दी गयी है। राजा में इन गुणों की प्रधानता होने से उनमें दैवी शक्ति का प्रादुर्भाव माना जाता था। श्री वाल्मीकी के अनुसार आदर्श राजा की गुणवान पराक्रमी, धर्मज्ञ, अनुग्रही, सत्यवक्ता, दृढ़प्रतिज्ञ, सदाचारी, हितसाधक, विद्वान, सामर्थ्यवान, जितेन्द्रिय ओर अजेय योद्धा होना चाहिए। इन्द्रियों को संयम मन का निग्रह, क्षमा, धैर्य, पराक्रम और अपराधियें की दण्ड देना राजा की विशेषताऐं होनी चाहिए। बालकाण्ड में राजा दशरथ के गुणों का वर्णन करते हुए श्री वाल्मीकी जी कहते है– कि वे वेदों के विद्वान तथा सभी उपयोगी वस्तुओं का संग्रह करने वाले दूरदर्शी और महान तेजस्वी थी। नगर और जनपद की प्रजा उनसे बहुत प्रेम करती थी। वे इक्ष्वाकु कुल के अतिरथी वीर थे। वे यज्ञ करने वाले जितेन्द्रिय और धर्मपरायण थे। महर्षियों के समान दित्य गुणों से सम्पन्न राजर्षि थे। उनकी तीनों लोकों कें ख्याति थी। वे बलवान शत्रुहीन, मित्रों से युक्त और इन्द्रविजयी थे। वेधन और अन्य वस्तुओं के संचय की दृष्टि से इन्द्र और कुबेर के समान जान पड़ते थे। जैसे महान तेजस्वी प्रजापति मनु सम्पूर्ण जगत की रक्षा करते थे। उसी प्रकार महाराज दशरथ की करते थे।

चित्रकूट मिलन प्रसंग में भरत से राजा द्वारा प्रश्न कराकर राजा द्वारा त्याज्य दुर्गुणों का भी रामायण में उल्लेख किया गया है जिसका वर्णन करते हुए वाल्मीकी ने कहा है कि वास्तविकता, आलस्य, नेत्र आदि पॉचों इन्द्रियों के वशीभूत होता राजकार्यो के विषय में अकेले विचार करना, प्रयोजन को न समझने वाले विपरीतदर्शी मूर्खों से सलाह लेना, निश्चित किये हुए कार्यो का शीघ्र प्रारम्भ न करना, गुप्त मन्त्रणा को सुरक्षित न रखकर प्रकट कर देना, मांगलिक आदि कार्यो का अनुष्ठान न करना तथा शत्रुओं पर एक साथ चढाई कर देना– ये राजा के चौदह दोष हैं।

इस तरह वाल्मीकी की दृष्टि में राजा देवस्वरूप और धर्म पर आधारित है। बिना धर्म के राजा, नहीं है उसे सदा धर्म पर ही चलना चाहिए। वह प्रजा के सुख में सुखी और दुख में दुखी हो और प्रजा को प्राणों से समान प्रिय हो। प्रजा पालन में कुशल हो, निर्भीक हो, स्वावलम्बी नीति निपुण, कठोर और कोमल हो।

5. **राजा के कर्तव्य :–** प्राचीन धार्मिक ग्रंथो के अनुसार राजा प्रजा के लिए ब्रह्म की देन है ताकि प्रजा उसकी सहायता से दुखी जीवन से छुटकारा पा सकें। प्रजारक्षण राजा का प्रधान कर्तव्य माना गया है। श्रीमद् वाल्मीकी रामायण के अनुसार राजा का प्रमुख कर्तव्य धर्म का पालन और प्रजारंजन है। श्रीमद् वाल्मीकी रामायण में अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख मिलता है। अरण्यकाण्ड के सर्ग पॉच में वर्णन मिलता है कि अनेक मुनि एकत्र होकर श्रीराम के पास पहुॅचे और

उन्होने रावण के राज्य के विषय में कहा कि उस भूपति के राज्य में महान अधर्म होता है तो प्रजा के उपज का छठा भाग कर के रूप में लेता है परन्तु प्रजा की पुत्रवत् रक्षा नहीं करता है।

बालकाण्ड में मुनि विश्वामित्र राक्षसी ताड़का का वधकरके अपने कर्तव्य का पालन करने का परामर्श देते हुए रमा ने कहा है कि '' रघुनन्दन तुम गौवों और ब्राहम्णों का हित के लिए दुष्ट पराक्रम वाली इस भयंकर दुराचारिणी राक्षसी का वध कर डालों'' नरश्रेष्ठ तुम स्त्री हत्या का विचार करके इसके प्रति दया न दिखाना। एक राजपुत्र को चारों वर्णों के हित के लिए स्त्री हत्या भी करनी पडे तो उसे मुॅह नही मोड़ना चाहिए।

रामायण के एक प्रसंग में सूर्पणखा श्रीराम के द्वारा तिरस्कृत हेाने पर कुपित होकर रावण के पास जाकर ठोस वाणी में राजा के कर्तव्यों का बोध कराती है और आगाह करती है कि '' जो राजा निम्न श्रेणी के भोगों में आसक्त होकर स्वेच्छाचारी और लोभी हो जाता है उसे महघट की आग के समान हेय मानकर प्रजा उसका आदर नही करती है।

अयोध्याकाण्ड में श्रीराम भरत को राजा के कर्तव्यों की ओर इंगित करते हुए कहते है– '' जो साम दाम आदि उपायों के प्रयोग में कुशल राजनीति शास्त्र का विद्वान विश्वासी भृत्यों में भेद उत्पन्न करने में लगा हुआ शूर मरने से न डरने वाला तथा राजा के राज्य को हड़प लेने की इच्छा रखने वाले है– यदि ऐसे पुरूष को जो राजा नही मार डालता है तो वह स्वंय उसके हाथ से मारा जाता हैं ।''

6. **शासन व्यवस्था के सिद्धान्तः–** रामायण कालीन शासन का स्वरूप राजतंत्रीय था। प्रशासन काफी विकसित था तथा प्रजा सुखी और समृद्ध थी। प्रशासन का अध्यक्ष राजा होता था जिसे राज्य कार्यो में सहायता और परामर्श देने के लिए निपुण मंत्री होते थे। इनकी मन्त्रणा के अनुसार ही राजा द्वारा शासन का संचालन किया जाता था। वाल्मीकी रामायण में बालकाण्ड के षष्ठ सर्ग में इसका उल्लेख किया गया है– अग्निहोत्री उत्तम गुणों से सम्पन्न तथा छहो अंगों सहित सम्पूर्ण वेदों के पारंगत विद्वान श्रेष्ठ ब्राम्हाण उस पुरी को सदा घेरे रहते थे वे सहस्त्रों का दान करने वाले तथा सत्य में तत्पर रहने वाले थें। ऐसे महर्षिकल्प महात्माओं और ऋषियों से अधोध्यापुरी सुशोभित थी और राजा दशरथ उसकी रक्षा करते थे।

अयोध्याकाण्ड में श्रीराम भरत को राजनीति का उपदेश देते है और राजकार्य से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें बताते है कि– '' भाई जो मन्त्ररहित उत्तम वाणों के प्रयोग तथा मन्त्रसहित उत्तम अस्त्रों के प्रयोग के ज्ञान से सम्पन्न और अर्थशास्त्र के अच्छे पण्डित है उन आचार्य सुन्धवा का तुम समादर करो''। श्रीरामचन्द्रजी द्वारा इस प्रकार राजनीति एवं धर्म की बातें सुनकर भरत ने उत्तर दिया– '' मै राज्य का अधिकारी न होने के कारण उस राजधर्म के अधिकार से वंचित हूॅ अतः मेरे लिए यह राजधर्म किस काम आयेगा। हमारे यहॉ सदा से ही इस शाश्वत धर्म का पालन होता आया है कि ज्येष्ठ पुत्र के रहते छोटा पुत्र राजा नही हो सकता। इस तरह विनीत भाव से भरत ने श्रीराम से राज्य स्वीकार करने की याचना की। श्रीराम द्वारा उन्हें सामर्थ्यवान बताते हुए उन्हे अपनी प्रतिज्ञा न तोडने के लिए कहा कि– ''तुम्हे यह जो स्वाभाविक वृद्धि प्राप्त हुई है इस बुद्धि के द्वारा तुम समस्त भूमंडल की रक्षा करने में भी पूर्ण रूप से समर्थ हो सकते हैं''। इसके अतिरिक्त अमात्यों सुहदों और बुद्धिमान मन्त्रियों से सलाह लेकर उनके द्वारा सब कार्य चाहे वे कितने ही बड़े क्यों न हो करा लिया करों।''

रामायाण के युद्धकाण्ड में रावण के मंत्रियों और सभासदों का उल्लेख किया गया है। श्रीराम द्वारा लंका पर चढाई कर देने की सूचना मिलने पर रावण ने अपने मंत्रियों की सलाह ली कि आप लोग अच्छी तरह सलाह करके कोई एक कार्य निश्चित करं उसको करना मैं अपना कर्तव्य समझूंगा । किन्तु राक्षसों को न तो नीति का ज्ञान था और न ही शत्रु के भक्ति का वे मूर्ख और बलशाली थे। उनके नाम थे– प्रहस्त, दुर्भख, बज्रदण्ड निकुम्भ, बज्रहनु। वे सब के सब रावण के सामने श्रीराम, सुग्रीव, लक्षमण और हनुमान को मार डालने की बात कहने लगे किन्तु उनमें रावण के छोटे भाई विभीषण जो अत्यन्त बुद्धिमान और दूरदर्शी थे उन्होने सभी राक्षसों को युद्ध करने से रोका और रावण से कहा कि– जो

मनोरथ, साम, दाम, और भेद इन तीनों उपायों से न प्राप्त हो सके उसी की प्राप्ति के लिए नीतिशास्त्र के मनीषी विद्वानों ने पराक्रम के अवसर बताये हैं।

रामायण के अन्तर्गत वाल्मीकी के द्वारा शासन व्यवस्था का संचालन प्रजा की प्रतिदिन की समस्याओं का निराकरण और उसके प्रति न्याय आदि राजा के महत्वपूर्ण कार्यो से ही सम्बन्धित एक कथा उत्तकाण्ड में कही गयी है कि राजा नृग ने राज्य में किसी समय पुष्कर तीर्थ में जाकर सुवर्ण से भूषित तथा बछडों से युक्त एक करोड गायें दान की। उसी समय एक गरीब बाह्मण की गाय भी बछडे सहित वहीं थी जिसे राजा ने संकल्प करके उसे किसी ब्राहम्ण को दान कर दिया। ब्राहम्ण बहुत वर्षो तक अपनी गाय ढूँढता रहा उसे अपनी गाय नही मिली। अन्त में वह गाय उसे कनखल पहुॅचकर एक ब्राहम्ण के घर में मिली और शबला–शबला बुलाने पर वह गाय उस ब्राहम्ण के पीछे हो ली। वह ब्राहम्ण जो उसका पालन कर रहा था गाय का पीछा करता हुआ बोला ब्राहम्ण यह गाय मेरी है राजाओं में ंश्रेष्ठ नृग ने इसे मुझे दान में दिया है। दोनों में महान विवाद उठ खडा हुआ और वे राजा नृग के दरबार में न्याय के लिये गये। वे राजा नृग के दरबार के बाहर कई दिनों तक खडें रहे किन्तु उन्हें राजा का न्याय नही प्राप्त हुआ और न ही राजा के दर्शन ही प्राप्त हुए। इससे क्रोधित होकर उन्होने राजा नृग को श्राप दे दिया कि '' हे राजन! अपने विवाद का निर्णय कराने की इच्छा से आये हुए प्रार्थी पुरूष की कार्य सिद्धि के लिए तुम उन्हें दर्शन नही देते हो इसलिए तुम सब प्राणियों से छिपकर रहने वाले प्राणी हो जाओंगे इौर सहस्त्रों वर्षो तक दीर्घ काल तक गडढे में गिरगिट होकर ही पड़े रहोगें।

7. **न्याय व्यवस्था–** वाल्मीकीकृत रामायण मे ंराजा का न्याय की प्रतिमूर्ति माना गया है। राजा सवंय धर्मासन पर बैठकर पुराहित एवं मत्रियों के सुनना चाहिए और निष्पक्षतापूर्वक न्याय करना चाहिए। यदि राजा न्याय नही करता है तो वह स्वयं पाप का भागी होता है। जिन व्यक्तियों को राजा न्याय पूर्वक दण्डित करता है वे पाप से मुक्त हो जाते हैं। राम का जन्म ही सज्जनों की रक्षा एवं दुष्टों के संहार के लिए हुआ था। रामायण के अन्तर्गत अनेक प्रसंगो में न्याय व्यवस्था का उल्लेख है कि –'' सहस्त्रों मनुष्यों से भरी उस कल्याण पुरी अयोध्या का इन्द्रतुल्य तेजस्वी राजा दशरथ न्यायपूर्वक शासन करते थे''। वे सभी मंत्री व्यवहार कुशल थे उनके सौहार्द की अनेक अवसरों पर परीक्षा ली जा चुकी थी। व मौका पड़ने पर अपने पुत्र को भी दण्ड देने में हिचकते नही थे।

इसी तरह बालकाण्ड में राजा सगर का प्रसंग है। राजा सगर का ज्येष्ठ पुत्र असमंज बडा दुष्ट प्रकृति का था। वह नगर के बालकों को पकडकर सरजू में जल में फेंक देता था। और जब डुबकी लगाने लगते तब उनकी ओर देखकर हंसा करता। वाल्मीकी जी कहते है कि– '' इस प्रकार पापाचार में प्रवृत्त होकर जब वह सत्पुरूषों को पीडा देने और नगरवासियों का अहित करने लगा तब पिता ने उसे नगर के बाहर निकाल दिया।

रामायण कालीन न्याय और दण्ड व्यवस्था का मुख्य आधार धर्म था और राजा धर्म के अधीन रहकर दण्ड का प्रयोग करता था। विष्णुपुराण में उल्लेख है– '' जो राजा न्याय का विस्तार होता है।'' दण्ड का उद्देश्य धर्म की रक्षा और न्याय की स्थापना है। धर्म का अर्थ है ऐसे कार्य जो करने योग्य है का सम्पादन किया जाना चाहिए। राजा द्वारा धर्म की स्थापना की जाती हैं वाल्मीकी के धर्म के अवतार था और धर्म विरोधी तत्वों को समाप्त करने के लिए उन्होने दण्ड का प्रयोग किया।

न्याय क्या है? धर्म क्या है? वाल्मीकी रामायण में न्याय को धर्म पर आधारित किया गया है और धर्म विरूद्व कार्यो को अधर्म कहकर उसे निषिद्व किया है। न्याय और दण्ड में दया को भी थोडा स्थान प्राप्त था, लेकिन यह अपवादस्वरूप था सामान्य नही। नारद जी के मुख से वाल्मीकी कहते है कि– '' तीन युगों में तीन वर्णो का आश्रय लेकर तपस्या रूपी धर्म प्रतिष्ठित होता है। नरश्रेष्ठ किन्तु शुद्र को इन तीनों ही युगों से तपस्या रूप धर्म का अधिकार प्राप्त नहीं होता। ये वक्तत्य समाज के चारों वर्णो के कर्तव्य पर आधारित है। राम के काल में कभी अकाल मृत्यु नही होती थीं।

8. **अर्थ और कोष –** राज्य के जीवन में अर्थ धर्म–सम्पत्ति का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य और समाज की उन्नति एक बड़ी सीमा तक अर्थ प्राप्ति निर्भर करती है। अर्थ के बिना राज्य और समाज समृद्धिशाली नही बन सकता। इस कारण प्राचीन भारत में समाज द्वारा स्थापित चार वार्णो में से वैश्य का प्रमुख कर्तव्य, कृषि, व्यापार, उद्योग और पशुपालन रखा गया था। वैश्य इन कार्यो द्वारा केवल अपने लिए ही नही बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए धनोपार्जन करते थे। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में कहा है कि जीवन के तीन उद्देश्यों मे अर्थ पर ही काम और मोक्ष की प्राप्ति निर्भर है। वाल्मीकी रामायण में अर्थ सम्पत्ति अथवा ऐश्वर्य का अकाट्य महत्व सिद्ध किया गया है। अयोध्या का वर्णन करते हुए वाल्मीकी जी कहते है कि – ''कोशल नाम से प्रसिद्ध एक बडा जनपद है जो सरयू नदी के किनारे बसा हुआ है वह प्रचुर धन–धान्य से सम्पन्न सुखी और समृद्धशाली है।''

प्राचीन भारतीय राज्यशास्त्रियों ने कोष को राज्य से सात अंगो में स्थान दिया है। वाल्मीकी रामायण में कोष शब्द का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। जिसमें कहा गया है कि राजा का अपने राजकोष क निरन्तर वृद्धि करना चाहिए। कोष की वृद्धि से ही राजा का जनकल्याण के कार्य कर सकता है, सैन्य व्यवस्था सशक्त कर सकता है। प्रशासन को अच्छी तरह से चला सकता है। रामायण में राजकोष में धन संग्रह के विभिन्न स्रोत बताये गये है, जिसमें प्रजा से कृषि, गोरक्षा, और वाणिज्य से प्राप्त आय, सार्वजनिक समारोहो में प्रजा और अन्य राजाओं से प्राप्त भेंट अर्थ, दण्ड आदि इसी प्रकार राजा द्वारा आक्रमण करके अन्य राजाओं को अपने अधीन कर लेने पर प्राप्त धन राजकोष के अधीन था। बालकाण्ड में उल्लेख मिलता है कि ''राजा दशरथ के मंत्री ब्राहम्णों और क्षत्रियों को कष्ट न पहुॅचाकर न्यायोचित धन से राजा का कोष भरते थे। ''

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वाल्मीकी रामायण के अन्तर्गत कोष अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता था, क्योकि कोष का संग्रह मुख्यतः तीन कार्यो के लिए किया जाता था। राज्य की सुरक्षा प्रजापालन तथा धर्मार्थ कार्यो में।

9. **युद्ध एवं सेना–** रामायाण में वाल्मीकी ने चतुरंग बल या सेना का उल्लेख किया है। जब मुनि विश्वामित्र ने राजा दशरथ से राक्षसों के संहार हेतु राम–लक्ष्मण को मांगा तो उनके वचनों को सुनकर वे चेतनाशून्य हो गये और होश में आने पर राजा ने कहा कि ''मेरा राम अभी बालक है। इसने अभी युद्ध की विद्या नहीं सीखी हैं यह दूसरे के बल को नहीं जानता न तो शस्त्र बल से सम्पन्न है बौर नही युद्ध कला में निपुण है। यह मेरी अक्षोहिणी सेना है जिसका मैं पालक और स्वामी हूॅ। इस सेना के साथ मैं स्वंय ही चलकर उन निशाचरों के साथ युद्ध करूंगा।

सेना को चार भागों में उल्लिखित किया गया है। 1. पैदल, 2. घुडसवार, 3. रथी 4. गजारोही। सेना को एक अन्य आधार पर वाल्मीकी ने चार भागों में विभाजित किया। 1. मित्रबल 2. अटविबल 3. भृत्यबल 4. द्विषदबल। राजा दशरथ की सेना में और पराक्रमी सैनिक थे। राम ने सुग्रीव की सहायता इसलिए मांगी थी कि वे अपने वानर सैनिकों के साथ सीता की खोज करें।

अयोध्या की पराक्रमी सेना का उल्लेख करते हुए वाल्मीकी जी कहते है कि शौर्य की अधिकता के कारण अग्नि के समान दुर्धर्ष कुटिलता से रहित, अपमान की सहन करने में असमर्थ तथा अस्त्र–शास्त्रों के ज्ञाता योद्धाओं के समुदाय से वह पुरी उसी रतह भरी–धूरी रहती थी। जैसे पर्वतों की गुफा सिंहो के समूह से परिपूर्ण होती है।

सन्दर्भ – ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकि रामायण– 7/14/7
2. वाल्मीकि रामायण– 1/1/71, 1/3/1
3. वाल्मीकि रामायण– 5/49/27
4. वाल्मीकि रामायण– 4/51/15, 29

5. वाल्मीकि रामायण– 2/69/14

6. वाल्मीकि रामायण– 6/97/14

7. वाल्मीकि रामायण– अयोध्याकाण्ड– 110/127

8. वाल्मीकि रामायण– 2/23/4

9. वाल्मीकि रामायण– 2/4/32–33

10. वाल्मीकि रामायण– 6/104/23

11. वाल्मीकि रामायण– 2/10/23

12. वाल्मीकि रामायण– 1/2/23

13. वाल्मीकि रामायण– 1/2/27,1/44/16

14. वाल्मीकि रामायण– 1/44/16

15. वाल्मीकि रामायण– 1/44/2

16. वाल्मीकि रामायण– 1/2/24–25

17. महाभारत में धर्म : डॉ0 शकुन्तला रानी तिवारी

18. रामायण कालीन राज्यदर्श : डॉ0 प्रभा खरे

19. वाल्मीकि रामायण में राज्य : डॉ0 शान्ति स्परूप, डॉ0 श्री निवास मिश्र
समाज एवं अर्थ व्यवस्था

20. महाभारत के शान्ति पूर्व में : कुकुम दत्त
धर्म का स्वरूप

21. रामायण कालीन समाज और : डॉ0 अच्युदानन्द घिल्डियाल
राज्य–व्यवस्था

22. राम कथा : कमलि बुल्के
वैदिक साहित्य में रामकथा के बीज : चन्द्रभान

23. धर्मशास्त्र का इतिहास : डॉ0 पाण्डुंरंग वामन काणे

24. धर्म दर्शन : बी0एन0 सिंह

25. धर्म का स्वरूप : हर्बर्ट डल्लू इनेडर

26. वाल्मीकि रामायण : गीता प्रेस गोरखपुर